ALL INDIA POWER ENGINEERS FEDERATION

(REGISTERED UNDER SOCITIES ACT XXI of 1860), Regd. No. 24085/93
REGD HEAD OFFICE B-1A/45A, Janakpuri, New-Delhi-10058
Corres. Address of CHAIRMAN-Hydel Field Hostel, 17 Rana Pratap MargLucknow-226001
M: 09415006225 Phone : 0522-4107706(Off), FAX:0522-2205417/0522-4079628
Email : chairmanaipef@gmail.com ersdubeylko@gmail.com & ersdubey@yahoo.com

---

No. 72-2025/AIPEF 31-12-2025

अलविदा 2025

इस साल के जख्म वर्षों तक सालते रहेंगे तो संघर्ष की आंच से राहत की दास्तां भी

गुजर रहा साल 2025 पॉवर सेक्टर के इतिहास में महज एक कैलेंडर का पन्ना नहीं है जो कल बदल जाएगा और सब कुछ भुला दिया जाएगा। यह साल स्मृतियों में दर्ज (खासकर उप्र और चंडीगढ़ में) उन जख्मों को छोड़ गया है जो समय के साथ भी आसानी से भरने वाले नहीं।

साल 2025 निजीकरण के विरोध में लंबे संघर्ष के लिए याद किया जाएगा। इसी साल केंद्र सरकार ने एक बार फिर इलेक्ट्रिसिटी (अमेंडमेंट) बिल 2025 जारी कर दिया है। यह बिल संपूर्ण पावर सेक्टर के अंत की शुरुआत का दस्तावेज है। वर्ष 2014 के बाद यह छठी बार है जब भारत सरकार ने इलेक्ट्रिसिटी (अमेंडमेंट) बिल जारी किया है। इसके पहले हमने पांच बार इस बिल को रोका है और नए साल की शुरुआत होने के पहले यह दृढ़ संकल्प कि हम छठी बार भी इसे रोकेंगे।

➢ **सबसे पहले उत्तर प्रदेश की बात।**

पूर्वांचल और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम के निजीकरण के विरोध में आज संघर्ष के 399 दिन पूरे हो गए हैं। भय और झूठ के बल पर निजीकरण की कोशिश के विरोध में यह आंदोलन "सत्य के लिए सत्ता से संघर्ष" की एक मिशाल है।

साल 2025 इसलिए भी जाना जाएगा कि पावर कारपोरेशन के प्रबंधन ने विरोध प्रदर्शन रोकने के लिए शक्ति भवन के सभी द्वारों पर ताले डालने की कायरतापूर्ण परंपरा बना दी। 2025 में ऐसा तानाशाहीपूर्ण आदेश किया गया जिसमें प्रबंधन ने अपने हाथ में यह अधिकार ले लिया कि बिना कोई चार्ज शीट दिए, बिना कोई पूछताछ किए किसी भी कर्मचारी या अभियंता को सीधे सेवा से बर्खास्त (Dismiss) किया जा सकता है और हटाया (Terminate) जा सकता है। ऐसा तानाशाही भरा आदेश शायद देश के किसी अन्य प्रांत में नहीं है।

निजीकरण का मार्ग आसान करने के लिए गुजरे साल में 25 हजार से अधिक अत्यंत अल्प वेतन भोगी संविदा कर्मियों को हटा दिया गया है। हटाने के पीछे कोई एक कारण नहीं जब मर्जी आए एक नया कारण ढूंढ लो। संघर्ष समिति के प्रमुख पदाधिकारियों पर डिस्प्रोपोर्सनेट एसेट में झूठी एफआईआर डर का माहौल बनाने के लिए की गई। नियमित कर्मचारियों का हजारों की संख्या में दूरस्थ स्थानों पर ट्रांसफर, फेशियल अटेंडेंस के नाम पर पांच पांच छह छह महीने तक वेतन रोकना, रियायती बिजली की सुविधा समाप्त करने हेतु जबरदस्ती स्मार्ट मीटर लगाना आदि आदि।

शांतिपूर्ण आंदोलन को कुचलने के लिए भय का वातावरण बनाने की यह सब महज बानगी भर है। आए दिन आदेश यह भी होते हैं कि जो मीटिंग में जाए उसे नौकरी से निकाल दिया जाए।

इन सब के बावजूद 2025 के आखिरी दिन आंदोलन के 399 दिन पूरे हो गए। वर्ष 2026 के सूर्योदय के साथ आंदोलन अपने 400 वें दिन में प्रवेश करेगा।

विद्युत कर्मचारी संयुक्त संघर्ष समिति, उत्तर प्रदेश का कहना है कि हमें नहीं मालूम आगे क्या होगा, लेकिन आज हम संघर्ष कर रहे हैं हम लड़ेंगे और अंतिम सांस तक लड़ेंगे।

➢ **चंडीगढ़**

साल 2025 की शुरुआत बहुत दुर्भाग्यपूर्ण रही जब पुलिस बल और बूटों की आवाज के बीच 31 जनवरी और 01 फरवरी की आधी रात में मुनाफा कमाने वाले चंडीगढ़ के बिजली विभाग को निजी कंपनी को दे दिया गया। रातों–रात चंडीगढ़ के सरकारी विभाग के बिजली कर्मी निजी एंप्लॉयर के हाथ सौंप दिए गए। बहुत ही बहादुरी और शौर्य के साथ लड़ने वाले चंडीगढ़ के बिजली कर्मियों का संघर्ष इतिहास में दर्ज हो गया है। साथ ही यह दास्तां भी दर्ज हो गई है कि 200 करोड़ का सालाना मुनाफा कमाने वाले चंडीगढ़ के बिजली विभाग को मात्र 700 करोड रुपए में बेंच दिया गया जिसकी परिसंपत्तियां ही लगभग 22 हजार करोड रुपए की है।

➢ **महाराष्ट्र**

महाराष्ट्र के बिजली कर्मी साल 2025 में बड़े शहरों के बिजली वितरण का पैरेलल लाइसेंस निजी कंपनियों को दिए जाने के विरोध में लड़ते रहे। महाराष्ट्र की सरकार विरोध के चलते पैरेलल लाइसेंस तो अभी तक नहीं दे पाई है किंतु महाराष्ट्र सरकार ने साल पूरा होते होते 13 सर्किलों के फ्रेंचाइजीकरण का आदेश कर दिया। यह जानते हुए कि फ्रेंचाइजी मॉडल पूरे देश में विफल हो गया, महाराष्ट्र में खास करके विफल हो गया है। 13 सर्कल को फ्रैंचाइजी पर देना निजी घरानों के साथ बेशर्म मिली भगत है ।

➢ **पंजाब**

पंजाब और उत्तराखंड में एक नई धारा शुरू हो गई है। साल 2025 में पंजाब सरकार ने निर्णय लिया कि धनराशि जुटाने के लिए पंजाब के पावर सेक्टर की असेट्स बेची जाएगी। उत्तराखंड सरकार को यह बहुत पसंद आ गया।साल गुजरते गुजरते उत्तराखंड सरकार ने भी जल विद्युत परियोजनाओं की जमीनों को बेचने का फैसला ले लिया। पंजाब में इंजीनियर्स एसोसिएशन के सभी पदाधिकारियों को, जनरल सेक्रेटरी को भी दूरस्थ स्थानों पर ट्रांसफर किया गया।पंजाब आज बॉलिंग पॉइंट पर है। पंजाब की नौकरशाही पावर सेक्टर को तहस–नहस कर देने पर तुली है। पंजाब में आंदोलन का शंखनाद हो चुका है। पंजाब सरकार न समझी तो पंजाब के आंदोलन की आग सत्ता के सिंहासन तक पहुंचेगी, यह तय है।

- **उत्तराखंड**

  उत्तराखंड भी आंदोलन की राह पर है। बिजली को राजनीति का औजार बनाना और इसी बिजली सेक्टर को तहत–नहस कर देने की कहानी के लिए 2025 याद किया जाएगा।

- **हिमाचल प्रदेश**

  हिमाचल प्रदेश में आवाज बुलंद करने वाले कर्मचारियों और अभियंताओं के संगठन को दबाने की कोशिश, कर्मचारी नेताओं को चार्ज शीट, आंदोलन, प्रदर्शन यह सब साल 2025 की एक झांकी है।

- **उड़ीसा**

  उड़ीसा में सबसे पहले बिजली का निजीकरण किया गया था। निजीकरण के दो प्रयोग उड़ीसा में पहले ही विफल हो चुके हैं। अमेरिका की ए ई एस कंपनी एक साल बाद ही भाग गई थी और रिलायंस पावर का 16 साल बाद पूरी तरह विफल होने के कारण रेगुलेटरी कमीशन ने लाइसेंस निरस्त कर दिया था। कोविड के दौरान चारों विद्युत वितरण कंपनियों का लाइसेंस टाटा को दिया गया। उड़ीसा के विद्युत नियामक आयोग ने अब स्वतः संज्ञान लेते हुए टाटा पावर की चारों कंपनियों नोटिस इशू किया है। अभी तक कोई अंतिम फैसला नहीं आया, सुनवाई जारी है और विद्युत नियामक आयोग ने टाटा पावर को हर सुनवाई में जमकर फटकार लगाई है।

- **जम्मू कश्मीर**

  साल 2025 में जम्मू कश्मीर से राहत भरी खबर आई है। ऐसा लगा मानो कश्मीर घाटी से हवा का ठंडा झोंका आया। जम्मू कश्मीर में दशकों से प्रतीक्षित अभियंताओं को एडहॉक से रेगुलर करने की शुरुआत हुई है। यह जम्मू कश्मीर के अभियंताओं के लंबे संघर्ष का परिणाम है।

- **मध्य प्रदेश और राजस्थान**

  मध्य प्रदेश और राजस्थान में चलती हुई परियोजनाओं को ज्वाइंट वेंचर के नाम पर हैंडोवर करने के आदेश हो गए थे। मध्य प्रदेश के बिजली इंजीनियरों ने इसके विरोध में एक दिन के हड़ताल की। संघर्ष का परिणाम आया और साल 2025 की शुरुआत में मध्य प्रदेश सरकार ने यह निर्णय लिया कि ज्वाइंट वेंचर नहीं किया जाएगा और अमरकंटक की परियोजना मध्य प्रदेश के विद्युत उत्पादन निगम को ही दी जाएगी। राजस्थान में भी ज्वाइंट वेंचर के विरोध में संघर्ष चलता रहा। यद्यपि कि अभी कोई अंतिम आदेश नहीं हुआ है लेकिन संघर्ष का परिणाम यह रहा कि अब एनटीपीसी इस बात के लिए तैयार हो गया है कि उसकी 49 परसेंट इक्विटी हो लेकिन एनटीपीसी अभी भी प्रबंध अपना मांग रहा है। संघर्ष अभी जारी है।

- **नये साल की दस्तक**

  बहरहाल अब जब नया साल दस्तक दे रहा है, तब यह केवल नई तारीख नहीं है, बल्कि नई सोच, नई प्रतिबद्धता और नई दिशा का अवसर है।

साल 2025 जाते जाते दुष्यन्त कुमार की पंक्तियां ...जिसकी 2026 में सबसे ज्यादा जरूरत है ...

कौन कहता है कि आसमां में सुराख नहीं हो सकता।
एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारों।

इन्कलाब जिंदाबाद।

शैलेन्द्र दुबे

शैलेन्द्र दुबे
चेयरमैन